वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A perfect blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 9	Year 1	Volume 9	May, 2013 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription cost Annual - **Rs. 75**-see page 2

Contact: Bhartendu Sood, Publisher, Editor & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tele. 0172-2662870 (M.) 9217970381 E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

विचार

ईष्या व प्रतिर्स्पधा के बीच की पतली लकीर

दुर्योधन व कर्ण महाभारत ग्रंथ के दो बहुत महत्वपूर्ण चरित्र है। दुर्योधन धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र होने के कारण युवराज थे, जब कि कर्ण कुन्ती का पुत्र होने के बावजूद भी दुनिया की नज़रो में एक सूत पुत्र था। यद्यपि दोनों के समाजिक स्तर में इतना फर्क था फिर भी दोनो के बीच बहुत घनिष्ठ मैत्री थी जिसका मुख्य कारण था दोनो के लिये पाण्डव ही उनके निजी सब से बड़े शत्रु थे।

दुर्योधन में बहुत शक्ति थी और वह मल्ल युद्व व गदा चलाने में बहुत परिपुर्ण था पर इतना सब होने पर भी वह भीम को कभी न हरा पाया था इस लिये वह भीम को अपना सब से बड़ा शत्रु मानता था। इसी तरह कर्ण धर्नुविद्या में बहुत माहिरता हासिल करने के बावजूद भी अर्जुन को कभी परास्त न कर पाया था, इसलिये वह अर्जुन को ही अपना सब से बड़ा शत्रु मानता था।

दुर्योधन मल्ल युद्व व गदा युद्ध में भीम को किसी भी तरह परास्त करना चाहता था, इसी तरह कर्ण अर्जुन को धर्नुविद्या में हराकर श्रेष्ठतम धर्नुधरी के रूप में अपनी पहचान करवाना चाहता था। ये महत्वाकांक्षायें उन दोनों की मैत्री को दिनो दिन मजबूत कर रही थी। पर साथ ही उनकी यह इच्छा समय के साथ एक भयंकर रूप धारण कर गई। अपने मकसद में सफल न होने के कारण, दुर्योधन व कर्ण दोनो ही अपने अपने प्रतिद्वन्दि भीम और अर्जुन के खून के प्यासे हो गये थे। फिर भी दुर्योधन व कर्ण दोनो की इस सोच में एक बहुत बड़ा अन्तर था।

दुर्योधन भीम को किसी भी तरह मारकर अपने रास्ते की अड़चन को खत्म करने पर तुल गया था, यहां तक की उसने भीम को मारने के लिये छल से जहर भी दिया। यह है

ईष्या की आग जिस में जल कर वयक्ति पागल हो जाता है और उसे ठीक गल्त का ज्ञान नहीं रहता।

जब की कर्ण अर्जुन को धर्नुविद्या में अपने आप को बेहतर दिखा कर ही मारना चाहता था व अपने मकसद को हासिल करने के लिये किसी भी गलत रास्ते को अपनाने को तैयार नहीं थां। यहां तक की जब एक बार युद्ध में कर्ण को अर्जुन को खत्म करने का मौका मिला तो कर्ण ने उसे हाथ से जाने दिया क्योंकि उस समय अर्जुन शस्त्र विहीन था। यह है प्रतिसर्पर्धा द्वारा अपने आप को बेहतर दिखाने की इच्छा।

इस तरह हम देखते हैं कि ईष्या व प्रतिसर्पधा में फर्क है। ईष्या वयक्ति को पागल कर देती है व उसे ठीक गलत का ज्ञान नहीं रहता व व्यकित अपने प्रतिद्वन्दी को नीचा दीखाने के लिये नीचता की किसी भी सीमा को लांघने में नहीं हिचकिचाता जब कि प्रतिसर्पधा मे व्यकित दूसरे को पराजित करने के लिये अपने हुनर व योग्यता को और पैना करता है व निखरता है, जों की गल्त नहीं। जीवन में प्रतिसर्पधा में शामिल होना बहुत अच्छी बात है।

जब कि ईष्यालु व्यकित अपनी इष्छा को पूरा न होते देख अपना मांसिक व शारीरिक संतुलन खो देता है वहीं स्वस्थ प्रतिसर्पधा में लीन व्यक्ति ऐसी स्थिती में अपने हुनर व योग्यता को और पैना करता है व निखारता रहता है वह किसी भी हालत में गलत तरीके नहीं अपनाता।

आज जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिसर्पधा है। हमारे चारों तरफ लोग हमसे आगे निकलने की दौड़ में लगे हैं। ऐसे में हम भी ं प्रतिसर्पधा से अपने आप को अलग नहीं कर सकते। पर देखने वाली बात यह है कि हम इस प्रतिसर्पधा की दौड़ में अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिये गलत तरीके न अपनाये व मुल्यों से सौदा न कर बैठें। अगर हम ऐसा करते हैं तो वह हमारी विजय न होकर हार होगी। इस प्रतिसर्पधा की दौड़ मे अपने तरीकों व मूल्यों के प्रति अन्धा हो जाना ही भ्रष्टाचार को व अनैतिक कृत्यों को पैदा कर रहा है और यह मानविय मूल्यों से विहीन भौतिक उन्नती ही हमें भयभीत कर रही है। सफलता के लिये यह ज़रूरी है कि लगातार कोशिश की जाये और उदेश्य के प्रति जागरूक रहें। जो सफलता गलत तारीके को अपना कर प्राप्त की जाती है उसके नयायिक व दूसरे अन्जाम व्यकित को कभी न कभी भोगने ही पड़ते है। जिसका उदाहरण है अनेक जनरल, I.A.S व दूसरें अफसरों का ऐसे अपराधों में पाया जाना जो कोई सोच भी नहीं सकता।

पर हम यह याद रखें कि ईष्या व प्रतिसर्पधा के बीच में बहुत पतली रेखा है। जब हम धर्म के गुणों को भूल कर किसी चीज को पाने में लग जाते हैं जो प्रतिसर्पधा ईष्या में बदल सकती है ं। मनुष्य को समय समय पर धर्म के मूल्यों को सामने रख कर अपना मूल्यांकन करते रहना चाहिये। यह और भी आवश्यक हो जाता है जब वह सफलता या असफलता के दौर से गुजर रहा हो।

****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 75 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। शुल्क आप मिलनें पर दे सकते है।
2. आप चैक या Cash निम्न अकाउंट में जमा करवा सकते है।
   Vedic Thoughts - Central Bank of India A/C No. 3112975979 Bhartendu Sood
   IDBI Bank - 0272104000055550 Bhartendu Sood , ICICI Bank 659201411714
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

क्यों मुश्किल में आए विजेन्दर

सम्पादकीय

अन्तराष्ट्रिय मुक्केबाज, ओलम्पिक में पदक विजेता व खेल रत्न पुरस्कार से अलंकृत विजेन्दर कुमार जिन्होने अपने कारनामों के लिये करोड़ों रूपया इनाम में पाया है, चरस का नशा प्रयोग करने के आरोप में घिरे हुए पाए गयें।

यह सोचना अवश्य है कि दिल्ली के एक बस चालक का बेटा जिस के पिता ने अपना पेट काट कर बेटे को इस योग्य बनाया वह धन, दौलत, नाम, ख्याति व हरियाणा पुलिस में D.S.P. जैसा पद पाने के बाद इस तरफ क्यों झुका जब की सब जानते हैं drugs व खिलाड़ी का कोई मेल नहीं और इस बात से भी सभी वाकिफ हैं कि आज पंजाब को जिस चीज़ ने खोखला कर दिया है वह हैं drugs व नशा और आज हरियाणा भी उसी रास्ते पर है। सच पूछीए तो जो विजेन्दर के रंग ढंग थे उससे मैं हैरान नहीं उसके विपरीत कुश्ती में दो बार पदक जीतने वाले सुशील उसी तरह विनम्र हैं और आपार धन, दौलत, नाम व ख्याति भी उनके चरित्र पर दाग नहीं लगा सकी है। यह फर्क है संगती के कारण और यहीं संस्कार काम करते हैं।

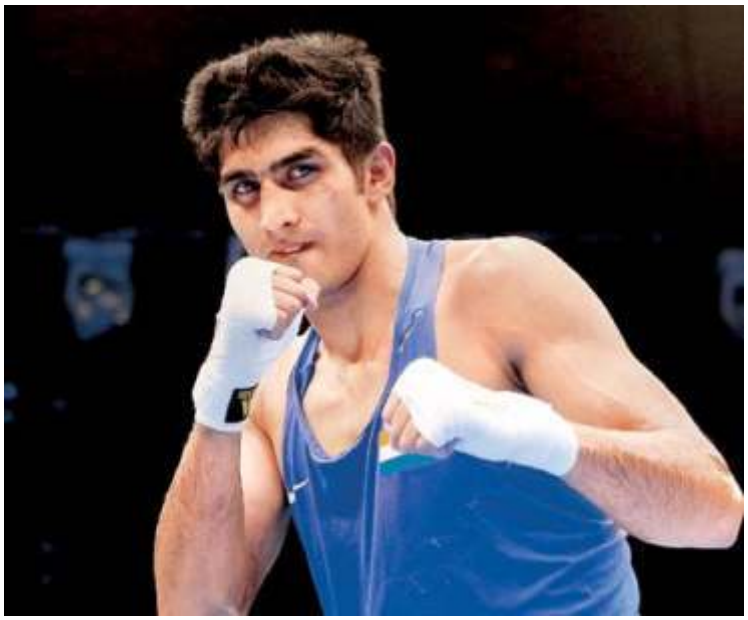

वेद में कहा है–– ' हे ईश्वर हमें ऐश्वर्य व वैभव मिले पर साथ ही कुटिलतापूर्ण कर्मो से भी दूर रहें क्योकिं ऐश्वर्य व वैभव के साथ कुटिलतापूर्ण कर्म विनाश की और ले जाते हैं। हमारी बार – बार यही प्रार्थना है कि हमे श्रेष्ठ मार्ग पर ही चलाना। साथ में कहा है हे प्रकाशस्वरूप प्रभु, सही ज्ञान और सही पथ प्रर्दशन के लिये हमें अच्छे ` परिपूर्ण विद्वानो व अच्छे आचरण वाले व्यक्तियों की संगति में ही रखें।

संगति व संस्कारो का जीवन में बहुत महत्व है। संगति के साधन है–– अच्छे व्यक्तियों का साथ , अच्छी शिक्षाप्रद पुस्तकों का अध्यन व ज्ञानवान गुरू । परन्तु अक्सर यह देखा गया है कि जब हम सफलता की सीढ़ीयां चड़ रहे होते हैं तो अध्यात्मवाद की और हम पीठ मोड़ लेते हैं, जब कि अध्यात्मवाद ही अच्छी सोच व विचारों का स्रोत है। इसकी जगह भौतिकवाद की चमक दमक हमे घेर लेती है। एक के बाद एक भौतिक वस्तु के पीछे भागते हैं। नई महंगी से महगीं कारे, आलीशान मकान एक नहीं अपितु अनेक, जहां हम कभी गये भी नहीं होते, वहां भी प्लाट जमीन पर इन्वैस्टमैंट। पर सन्तोष नहीं होता अपितु मृगतृष्णा की तरह असन्तोष बढ़ता ही जाता है। परिवार के सदस्यों का स्थान ले लेतें है ऐसे मित्र जो की स्वार्थ से वशिभूत होते हैं उनकी बातें ही अच्छी लगती है। ऐसे ही मित्र अपने स्वार्थ के लिये अक्सर गलत रास्ते में डाल देते है, जिस कारण यह सब कुछ विजेन्द्र के साथ भी हुआ।

बात सिर्फ विजेन्दर की ही नहीं, आज अधिकतर घरों की यही कहानी है। जैसे ही धन बरसने लगता है वैसे ही व्यक्ति अधिक से अधिक सुख के साधन जुटाने में लग जाता है। सुख के साधन जुटाना भी बुरा नहीं अगर हम अपने व परिवार के जीवन को विलासिता से बचाए रखें।

हम इन सब बुराईयों से बच जाऐं अगर हम हमने घर की एक खिड़की अध्यात्मवाद की तरफ खोल रखी हों। जब हम ऐसा करते हैं तों लगातार अच्छी संगती व अच्छे विचार मिलते रहते हैं जो कि हमें गल्त रास्ता अखतयार करने से बचा लेते हैं।

प्रश्न उठता है क्या है वे अध्यात्मवाद की बातें जो हमें इस लोभ व मोह की प्रवृति से बचा लें

1 इस संसार की कोई भी वस्तु केवल हमारे लिये नहीं है वल्कि सब के लिये है। महात्मा गान्धी के शब्दों में, ज़रूरत से अधिक जो भी सम्पदा हमारे पास है, उसका भगवान ने हमें केवल रक्षक बनाया हैं न की मालिक।

2 किसी भी दुनिया की चीज पर प्रयोजन रहित कब्जा बनाकर रखने से अच्छा है उस का आवश्यकता पूर्ती के लिये प्रयोग हो।

3 भौतिकवाद में खुशी ढूंडना मृगतृष्णा की तरह है।

4 हमारे अच्छे कर्म ही हमें खुशी प्रदान कर सकते हैं।

5 धन एक नौकर के रूप में तो ठीक है पर जब हम इसे मालिक का रूप दे देते हैं तो बात बिगड़ जाती है।

एक विचारक के अनुसार भौतिकवाद की तीन stages हैं

पहली stage––– जब धन हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है

दूसरी stage ––– जब धन हमारी वर्तमान भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ भविष्य के लिये सुरक्षा प्रदान करता है।

तीसरी stage –– जब धन हमे विलासिता की और ले जाता है।

पहली दो में बुराई नहीं है। परन्तु तीसरी stage में हम कुटिलतापूर्ण कर्मो से तभी बच सकते हैं जब हम धन का त्याग भाव से भोग करते हैं

वेद कहते हैं

1––अग्निना रयिमश्नवत पोषमेव दिवे दिवे।

यशसं वीरवत्वमम।

ऐ मानव ! तू खूब धन कमा, परन्तु तेरा धन आत्मा और शरीर की पुष्टी करने वाला, कीर्ति को बढाने वाला व ऐसा धन हो जिसे विद्धान व शूरवीर भी चाहते हैं।

परन्तु साथ ही कहा है

2--'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः–– अर्थात त्याग भाव से भोग। कुछ सोच उनके लिये भी रखें जो हमारी तरह भाग्यवान नही।

वेदों की उपर लिखी दो सुक्तियों के अनुसार व्यक्ति खूब धन कमाए परन्तु अपनी जरूरत के लिये जितना धन चाहिये उतना रख कर बाकी समाज में जरूरतमन्द के कल्याण के लिये भी दें। यह है त्याग भाव से भोगना।

जब मनुष्य त्याग व कल्याण के मार्ग को पकड़ लेता है तो अच्छे विचार ख़ुद व खुद उसके मन में आने लगते हैं और वह बुराईयों से दूर रहता है और सब कुछ पाकर भी विजेन्दर की तरह मुश्किल में नहीं आता।

****

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-A, चण्डीगड़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

ईश्वर

ईशावास्यमिदॅं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृध कस्य स्विद्धनम् ।।

God is present everywhere even in the minutest part of element, in animate and inanimate both. Everything made by God is for the enjoyment of human being but without his getting attached and without having any greed.

जो कुछ दिख रहा जगत में,
सब में ईश समाया है,
त्याग भाव से जीवन जीना,
यह ढ़लती फिरती छाया है,
मोह माया के वशीभूत,
क्यों करता मेरा मेरा है,
भूल गया यह जगत बावरे,
चिड़िया रैन बसेरा है,
अति लोभ में कभी न फंसना,
ऋषियों ने फरमाया है,
किसके साथ गई बोलो,
नश्वर माया और काया है।

****

Your desire for success should be greater than your fear of failure

He lost his job in 1832;
He was defeated in legislature election in1832;
In1833 he started business but failed,
In 1834 he was elected to legislature but his sweetheart died, 1835.
In 1836 he had nervous breakdown;
In 1838, he was defeated in the election to the post of Speaker;
In 1843 he was defeated for nomination to the Congress,
In 1846 he was elected to the Congress but lost renomination in 1848;
In 1849 he was rejected to the post of land officer
In 1854 he was defeated in election to the Senate and 1n1856 failed in his nomination bid for the post of Vice-President, 1856;
In 1858 he was again defeated for Senate,

ABRAHAM LINCOLN

However, in 1860 he managed to become the President of the United States of America , despite all the setbacks.

Life can only be led on a "best efforts" basis. To look back and say, "I could have done better", is not realistic. So do not let failure stop you from trying. Do not waste time worrying about what went "wrong". You can learn something from every experience. Remember: You are always older and wiser than the last time you dealt with a similar situation, even if it was only 15 minutes ago.

As Bill Cosby said, "In order to succeed, your desire for success should be greater than your fear of failure." In the words of former British Prime Minister Winston Churchill: "Success is not final, failure is not fatal: it is the courage to continue that counts. Success consists of going from failure to failure without loss of enthusiasm." The habits of a lifetime cannot be changed in a few days. It takes time – sometimes a year or two. There is no "Open Sesame" to getting control of your time and your life. But you can make much progress toward realizing your everyday and life goals even in a short time.

Mahatma

Neela Sood

Only a mahatma can treat gold like a lump of mud.

The literal meaning of Mahatma is an elevated soul. Definitely such an elevated soul has to be above a normal human being. One who raises himself above others with his acts of selfless service, aimed at improving the condition of less fortunate and deprived, is a Mahatma. Mahatma not only works selflessly but makes sacrifices of his own comforts and privileges to enlighten the lives of others. Frugal and austere living are his forte.When I read the lives of great men, I am fully convinced that Hansraj who carried forward the message of Swami Dayanand Saraswati, is one such noble soul who fully deserves this epithet of Mahatma.

Here, I am dwelling on a few incidents of his highly illustrious life which puts him in this highly revered but fast depleting category of Mahatmas.

In 1883 when the first DAV school was established in Lahore, now a part of Pakistan, he voluntarily offered to work without any remuneration as the Head Master of the school. What is important to remember here is that, at that time, any graduate could easily take up a highly remunerative & glamorous assignment in the government but declining the money and glamour, he chose to embrace the path of selfless service. Though, it may sound incredible today, but for 25 years, till he remained head of the DAV institutions in Lahore, he didn't take any salary. Here it is worth noting that he was from a very humble background and it was his brother Mulakhraj who looking at his noble intentions decided to give him Rs 35 per month from his salary of Rs 75. Mahatma Hansraj raised his family of seven members with in this assistance of Rs 35. A man who was disbursing salary in thousands would come to home empty handed. Only a Mahatma can do it. No words are enough for his highly magnanimous & caring brother too who continued with this unsolicited assistance for almost 25 years. In today's time, when we read the instances of one brother, rolling in billions, killing his brother for share in property, the acts of these great souls look to be a part of a fable.

Even when he had become the principal of DAV College, the only furniture he had in his house was a simple cotton mat, one table and chair. Once when he was watering the plants in the courtyard of his small house, a guest came to see him. Taking him to be a gardener, the guest after giving his introduction asked him to tell Mr Hansraj that he wanted to see him. Hansraj smiled and said, “Please be seated in the office, he'd be reaching there any time.” That person was flabbergasted and was in a state of disbelief when he saw that the person he had mistaken for the gardener was Hansraj himself, the Principal of the college. So austere was his living. **To be frugal and austere in living when you are in a state of deprivation is one thing but to exercise these virtues when you could have easily got everything for asking is something which only a Mahatma can do.**

He'd deposit all gifts which he'd get as the head of the institution, in the Store of the school. Once when a rich man taking note of his worn out coat gifted him a new coat, he sent it to the stores dept for sale to the needy with the remarks that the coat

he was having served his needs very well and if he ever needed another, he 'd buy one. **Any person who shuns what a common man craves for can only be a Sanyasi or a Mahatma .**

Even when his son was imprisoned to Kalapani by the British, he remained firm and undeterred. Not only this, after 25 years of highly magnificent service first as the Headmaster and then as the Principal of DAV college, he himself resigned from the post to associate himself with other philanthropic causes. **Only a Mahatma could show such spirit of renunciation.**

He was fond of trekking and often would trudge even hundreds of miles to reach his destination. Once he was invited for discourse by an Arya samaj in Kashmir. He reached there trekking through the mountains. When he was to leave for his return journey, the Arya samaj authorites gave him an envelope containing money towards his fare. He refused by saying that he came walking so it was not right for him to take money towards the fare. **Only a mahatma can treat gold like a lump of mud.**

****

Know Manik Sarkar----four time Chief Minister of Tripura

This is one example of how an honest person with austere and frugal living can make a difference in the lives of millions.

Most of the readers will not believe that the bank balance of this man decreased in his tenure as Chief Minister. Son of a tailor, Manik Sarkar does not possess any moveable or immovable property. An ancestral house in the village was transferred in his name after the death of his mother; which he gave to his sister. He does not have a car, or even a cell phone. Manik Sarkar does not use even red beacon (light) on his official car, though he has been the Chief Minister of the state for the last 20 years..

His morning starts with washing his clothes. He donates his whole salary to his CPI (M) party, and gets Rs 5,000- as subsistence allowance. He is a commerce graduate. Media has named him the 'poorest' Chief Minister, but if you ask me he is the 'richest man' as he commands unflinching support and respect of 93 per cent of Tripura voters. The people of the state have reposed full faith in his leadership with three-fourth majority. Under his able leadership, the Left Front has won 50 seats, (one more than the last elections) out of the total strength of 60 in Tripura Legislative Assembly elections. Leadership of the party is totally relieved after giving the reins of the state in the hands of Manik Sarkar, whose honesty and probity in public life has few parallels.

There was a time when Tripura was badly plagued by insurgency but Manik Sarkar has been successful in bringing it down, and make people feel safe.

This is one example how an honest person with austere and fruqal living can make a difference in the lives of millions.

गुरू धारण करें पर परख कर

महात्मा आनन्द स्वामी की पुस्तक से

एक आर सन्त दादू किसी नये स्थान पर चले गये व नगर से दूर किसी विरान जगह पर ठहर गये। ज्यों–ज्यों लोगों को पता चला त्यों त्यों वे उस विरान जगह पर आकर ही प्रभु भक्ति का अमृत पीने लगे।

शहर के कोतवाल को जब पता चला कि दादू नाम क सन्त आये हुये हैं तो उस के मन में भी आया कि चल कर उस महात्मा के दर्शन करने चाहिये। अपने घोड़े पर चड़कर कोतवाल महोदय दादू सन्त को मिलने चलपड़े। काफी दूर आ गये पर कोतवाल को दादू सन्त न दिखाई दिये। आगे कुछ दूर जाने पर एक दुबला पतला व्यकित दिखाई पड़ा जिसने केवल एक लगोंटी पहन रखी थी। वह मार्ग की झाडियों को काट कर फैंक रहा था ताकि मार्ग साफ हो जाये। कोतवल ने उसके पास जाकर पूछा––"अरे ओ भिखारी! तुझे पता है दादू सन्त कहां रहते हैं?"
उस व्यकित ने कोतवाल की और देखा पर बोला नहीं। कोतवाल ने समझाा यह बहरा है, चिल्लाकर बोला, "अरे मूर्ख! मैं पूछता हूं दादू कहां रहता हैं?"

इस बार उस व्यक्ति ने कोतवाल की तरफ देखा भी नहीं और अपना काम करता रहा।

कोतवाल को कोध आया। जिस चाबुक से वह घोड़े को चलाता आया था उसी से उस व्यक्ति को मारने लगा। चाबुक से उस व्यकित के शरीर पर निशान पड़ गये पर तब भी वह व्यक्ति न बोला। क्रोधित होकर कोतवाल ने चाबुक का डण्डा उस व्यकित के सिर पर दे मारा और चिल्लाकर कहा––– " क्या तू हां या नहीं में
उत्तर नहीं दे सकता? परन्तु वह व्यकित फिर भी न बोला। उसके सिर से रक्त वह रहा था पर इसका कोतवाल पर कोई असर न था।

कोतवाल ने सोचा जो व्यक्ति इतना कुछ होने पर भी न बोला वह ज़रूर गूंगा बहरा आर पागल है, और वह आगे निकल गया। कुछ दूर जाने पर एक और व्यक्ति मिला। कोतवाल ने उस व्यक्ति को रोक कर उस से भी दादू का पता पूछा।

"आपको इसी मार्ग पर पीछे दिखाई नहीं दिये, मैं तो अभी उन से मिलकर आया हूं। वह झाड़ीयां काट रहे थे ताकी इस मार्ग पर आने वालों को मुश्किल न हो"–––उस व्यक्ति ने कहा।

कोतवाल ने आश्चर्य से मुंह फाड़कर कहा,––– " उस लंगोटी पहने दुबले पतले की बात तो नहीं कर रहे,"

"हां, वही तो हैं महात्मा दादू। आपने शायद उनकी और ध्यान नहीं दिया" वह व्यक्ति बोला ।

कोतवाल ने जल्दी से घोड़ा मोड़ा व वापस उस व्यक्ति के पास पहुंचे, जिसे शरीर पर अव भी चाबुक के चिन्ह थे और सिर पर पटटी बांध ली थी। "क्या आप ही सन्त दादू हैं?" कोतवाल बोला।

वह व्यक्ति मुस्कराया व कोतवाल को देख कर धीमें से बोला––––" इस शरीर को दादू भी कहते हैं।"

कोतवाल जल्दी से घोड़े से उतरा, उनके पैरों में गिर पड़ा। दुखःभरी आवाज में बोला,–––" क्षमा कर दो महाराज! मैं तो आपको गुरू धारण करने आया था।"
दादू ने उसे प्यार से उठाया और बोले–––" तो फिर यह दुख किस लिये? व्यक्ति जब घड़ा लेने जाता है तो उसे ठोक पीट कर देखता है, अगर ठीक लगे तभी लेता है तो जो गुरू जीवन का मार्ग दिखाने के लिये धारण करना है उसे ठोक पीट कर देख लिया तो उसमें हर्ज कैसा? थोड़ी देर बैठो। मैं यह झाड़ी

परे फैंक लूं, फिर बैठकर बाते करेगें। ये झाड़ीयां और इनकं कांटे मार्ग चलने वालों को बहुत कष्ट देतें हैं।

जिस व्यक्ति में ऐसे गुण———तप,त्याग, धैर्य, सहनशीलता,सेवा भाव, सन्तोष, विनम्रता हों। जिसे लोभ, अंहकार, कोध व मोह छूने न पाए और सब से बड़ी बात जिसका आचरण ही संदेश देता हो, उसे ही गुरू धारें। अगर ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता है तो अच्छी पुस्तकों को ही गुरू मानकर उनका स्वाध्याय करें। गुरू गोविन्द साहब ने इसी लिये गुरू ग्रन्थ साहब को ही अन्तिम गुरू मानने का आदेश दिया।

कहते हैं एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती लाहोर में जब एक आर्य समाज में पहुंचे तो हवन हो रहा था। स्वामी जी को देखते ही सभी आदर के तौर पर अपनी अपनी जगह से खड़े हो गये। स्वामी जी ने सब को बिठा दिया व हवन जारी रखने को कहा। हवन खत्म हो गया तो स्वामी जी सब को सम्बोदित करते हुए बोले———जब आप उस सृष्टि के रचइता की भक्ति में लीन हैं तो मैं तो क्या चाहे कोई राजा ही क्यों न आए, आपको अपनी भक्ति को नहीं छोड़ना चाहिए। चाहे मैं हू या कोई राजा, उसको बनाने वाला वह प्रभु ही है, हम उस प्रभु से अधिक सम्मान के हकदार कैसे हो सकते हैं?

पर आज हाल यह है कि जो लाखों गुरू घंटाल बाजार में हैं वे अपने अज्ञानी चेलों से उस सर्वशक्तिमान की भक्ति छुड़वाकर अपनी भक्ति शुरू करवा देतें है। ऐसे गुरूओं से बिना गुरू के ही अच्छे हैं।

दो बातों का सदैव ख्याल रखें—— कोई व्यकित कितना भी ज्ञानी है पर अगर वह कोध करता है और अपनी जरूरत के लिये धन होने के बावजूद भी दक्षिणा व धन की इच्छा करता है और मांगता है तो वह गुरू बनने लायक नहीं। इन दोनों बातों का पता आपको थोड़े समय में लग सकता है।

****

FEEDBACK

Ravi Kumar
HN. 41 Sector 15
Chandigarh 160015
Mobile : 9501001541

I am really impressed by your idea of creating social support cells in our religious institutions as explained by you in the article **" RELIGION IN A NEW ROLE"**in the april 2013 issue of VEDIC THOUGHTS.
I shall take up this matter in the next Executive Body Meeting of Arya Samaj Sector 16, Chandigarh and shall also invite you to explain the modalities of the proposed venture to our executive members. I am sure you will be in a position to highlight the necessity of this laudable activity and convince about this noble initiative.

Once again I fully endorse your initiatives of DOING something tangible for the society through the active involvement of our large reservoir of talented, dedicated and devoted members of Arya Samaj like you.

RAVI KUMAR
Shri Ravi Kumar retired as the General Manager from Panjab & Sindh Bank and is a devout Arya samajist. At present, he is associated with Arya samaj Sector-16 as its Secretary

अभी या फिर कभी नहीं

सीताराम गुप्ता

एक बार एक व्यक्ति ने घोर तपस्या करके भगवान को प्रसन्न कर लिया। भगवान ने उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसे वर दिया कि जीवन में एक बार सच्चे मन से जो चाहोगे वही हो जाएगा। उस व्यक्ति के जीवन में अनेक अवसर आए जब वो इस वरदान का इस्तेमाल कर अपने जीवन को सुखी बना सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। कई बार भूखों मरने की नौबत आई लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। अनेक ऐसे अवसर भी आए जब वह इस वरदान का प्रयोग कर देश की काया पलट कर सकता था अथवा समाज को ख़ुशहाल बना सकता था लेकिन उसने ऐसा भी नहीं किया क्योंकि वह तो मन में और ही कुछ ठाने बैठा था।

वह उस अवसर की तलाश में था जब मौत आएगी और वह अपने वरदान का इस्तेमाल कर अमर हो जाएगा और दुनिया को बता देगा कि प्राप्त वरदान का उसने कितनी बुद्धिमत्ता से इस्तेमाल किया है। लेकिन मौत तो किसी को सोचने का अवसर देती नहीं। मौत ने चुपके से एक दिन उसे आ दबोचा। उस का वरदान धरा का धरा रह गया।

आज हम में से अनेक लोगों के पास अवसरों की कमी नहीं है। जो सक्षम और समर्थ हैं उनके तो कहने ही क्या हैं? किसी के पास धन–दौलत के भंडार हैं तो किसी के पास सत्ता की ताक़त है। किसी के पास ज्ञान का आगार है तो कोई बाहुबल में बहुत आगे है। कोई अपने जीवन में कठोर संयम का पालन करने वाला है तो कोई अत्यंत संवेदनशील और दयालु है। ये सब कोई मामूली चीज़ें अथवा स्थितियाँ नहीं हैं अपितु अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थितियाँ हैं। ये स्थितियाँ वरदान से किसी भी तरह कम नहीं हैं।

पैसे को ही लीजिये। पैसे से क्या नहीं हो सकता? कहीं पैसों के अंबार लगे हैं लेकिन पैसों के अभाव में कोई भूखों मरने को विवश है तो कोई बिना दवा के बीमारी में दम तोड़ने को अभिशप्त है। न जाने कितने लोगों की भुजाओं में अपरिमित बल है लेकिन इसके बावजूद अनेकानेक लोग अरक्षित और शोषित हैं। ऐसे बाहुबल का क्या प्रयोजन जो कमज़ोर की रक्षा न कर सके? कई लोगों के हाथों में ऐसी शिफा होती है कि जिसको छू दिया वही भला–चंगा हो गया। कई दूसरे वैद्य–हकीम अथवा डॉक्टर कमाल के उपचारक होते हैं लेकिन यदि वे अपने हुनर का सही इस्तेमाल ही नहीं करेंगे तो उस हुनर का क्या फायदा?

इसके बाद बारी आती है सत्ता की ताक़त की। सत्ता की ताक़त क्या नहीं कर सकती? सत्ता की ताक़त से विरोधियों को कुचला जा सकता है। सत्ता की ताक़त से सत्ताधीशों की शान में क़सीदे लिखवाए जा सकते हैं। सत्ता की ताक़त से अर्थोपार्जन संभव है। लेकिन इसी सत्ता की ताक़त से देश को ख़ुशहाल बनाया जा सकता है। इसी सत्ता की ताक़त से कंकाल रूपी असंख्य नागरिकों को मानव के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। इसी सत्ता की ताक़त से शोषितों को, मज़लूमों को शोषण से मुक्त किया जा सकता है। सामर्थ्यवान ही कमज़ोर को भयमुक्त करने में सहायक हो सकता है।

इस सब के बावजूद वे इन नेमतों का सदुपयोग नहीं करना चाहते। मौत से पहले जी लेने का अर्थ है अपनी सामर्थ्य अथवा इन नेमतों का सदुपयोग कर लेना। और यह बेहद ज़रूरी है और अभी करना ज़रूरी है क्योंकि बाद में तो कोई अवसर मिलने से रहा। ये दौलत, ये बाहुबल, ये सत्ता की ताक़त कुछ भी साथ नहीं जाने वाला है। जिन के लिए ये सब कर

रहे हो उन के भी काम नहीं आने वाला है। सुना नहीं क्या मुग़लों के अनेक वंशज आज जगह–जगह मज़दूरी करके किसी तरह अपना पेट भर रहे हैं? क्या उनके पूर्वजों ने कम दौलत संग्रह की थी? न उनके साथ गई और न उनके वंशजों के काम ही आई। उनके साथ गई तो केवल नेक कामों की कीर्ति। ये नेक कामों की कीर्ति मौत से पहले जी लेने की प्रक्रिया का ही पर्याय है।

इस देश को आज़ाद करवाने के लिए लाखों लोगों ने अपने प्राणों की ही आहुति दे डाली। आज भी सत्ता के उच्च शीर्ष पर बैठे कुछ सत्ताधीशों के पास अवश्य ही देश के लोगों के दुख–दर्द बाँटने का जज़्बा होगा। फिर देर किस बात की है? अब चूक हो गई तो फिर दोबारा ये मौक़ा हाथ में आने का नहीं। कोई स्थिति कितनी ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हो उससे समय पर लाभ उठा लेना ही बुद्धिमानी है। कोई कितनी ही क़ीमती चीज़ क्यों न हो उसका समय पर इस्तेमाल कर लेना ही समझदारी है नहीं तो बाद में पछताने के सिवाय कुछ हाथ नहीं आता। वर्तमान समय और वर्तमान उपलब्ध अवसर का समय पर उपयोग दोनों का ही भरपूर इस्तेमाल करना बुद्धिमान व्यक्ति का लक्षण है।

उर्दू के मशहूर शायर 'शुजाअ' ख़ावर का एक शेर है:

'शुजाअ' मौत से पहले ज़रूर जी लेना,
ये काम भूल न जाना बड़ा ज़रूरी है।

ए.डी. 106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
फोन नं. 011–27313679 / 9555622323
Email :srgupta54@yahoo.co.in

****

मुम्बई धमाकों के न्यायिक फैसले की एक खास बात

मुम्बई धमाकों के न्यायिक फैसले में एक बहुत अहम बात जो बहुत कम लोगों ने ध्यान दी यह थी सर्वोच न्यायालय की यह टिपन्नी––– '' 8 मुम्बई पुलिस व 5 कस्टम विभाग के कर्मचारी यदि आतंकवादीयों की सहायता न करते तो शायद यह भंयकर वारदात न होती'' मजे की बात यह है कि यह सभी व्यक्ति हिन्दु है व उन्होने 10 लाख रू के लिये यह घिनोना काम किया।

हिन्दुस्तान में मोहमद गौरी को लाने वाला जयचन्द था। सोमनाथ के मन्दिर की आपार धनराशी को मोहमद गजनी के हाथों लुटवाने वाला वहां का एक पुजारी था। आज भी जितनी भी आतकवाद की घटनायें होती हैं वह हमारे अपने आदमियों की मिली भक्ति के बिना नहीं हो सकती। अगर हमारा अपना चरित्र हो तो कोई बाहर की ताकत कुछ नहीं कर सकती। आज इस देश में जिस चीज की सब से अधिक आवश्यकता है वह है चरित्र पर यह दुख की बात है कि जिस चीज मे हम दिवालिये हो गये हैं वह है चरित्र।

****

TO BE STRESSFREE

One should not worry about two things:
First, "Things you can't change"
The second "Things you can change."

There are many things such as one's ageing process which one can't change. What is the point of worrying about it? Similarly, there are many things one can change. In respect of such things, one has to act, rather than worry. Because, if you can change things, why worry? And in order to effect the change, you need to take the requisite action.

Home Made Wonders

Bhartendu Sood

My eldest sister would give me a hand knitted woolen sweater on every Bhaiya dooj. She was so innovative in the matter of designs on the sweaters that during my Shimla days as a student, very often when I'd walk down to the Mall wearing a sweater gifted by her, women would stop me on the way to take note of the intricate design to replicate on the sweaters they intended to knit. These had not only warmth but also rich feelings of love, care and oneness. In this winter when North India was in the grip of bone chilling cold I was wearing a sweater made of pashmina wool which she had gifted to me in eighties. Knitting sweaters for every body in her home and for her brothers and sisters and elders was her main hobby and she'd derive great pleasure to gift these to them. Each and every sweater would have different design and their enchanting looks would leave everybody spell bound. Encomiums and rich compliments would be the only return to her and she'd feel happy with that.

Home made food delicacies, pickles, chatnis, papads, variyans, hand knitted woolens and their exchange as gifts were a few such things which would create bonds of love and affection. Not long ago, when a boy would visit to see his prospective bride, the girl would join the guests with a tray, holding tea set and something home cooked in a plate wrapped in a crocheted cloth, in her trembling hands. The snacks and crocheted piece of cloth would be considered as her testimonials and girl's parents would show such embroidery work of her with gleam in their eyes.

But today from the smallest to the biggest ceremony we rush to big hotels whose glitz never allows us to see the real person. No wonder even after spending years together many couples remain strangers and an enigma to each other.

****

K'taka church launches e-Bible in Konkani

इनका मकसद है अपनी विचारधारा को फैलाना क्योंकि विचारधारा तभी फैलती है जब लोगों की भाषा में फैलाई जाये। अभी मैं Good Friday के दिन दूर दर्शन पर उनके मुख्य पादरी का संदेश सुन रहा था । बहुत ही साधारण हिन्दी में था जिसकी हर बात समझ आ रही थी। यही अगर संदेश ऐसी भाषा में होता जो कि चन्द लोग ही समझ पाते तो स्वीभाविक था मैं TV switch off कर देता।

If you talk to a man in the language he understands, it goes to his head. If you talk to him in his language, that goes to his heart.

Nelson Mandela

यह भारत का दुर्भाग्य है कि इन संस्कृत के पण्डितो व गुरूकुल वालों ने अपने स्वार्थ के लियें आर्य समाज की विचारधारा को खत्म का दिया। जानते यह भी हैं कि संस्कृत में बोले गये मन्त्रों को आम जनता नहीं समझ सकती पर पर अपने प्रभुत्व व आमदनी का लोभ इनको ठीक रास्ता अखतियार नहीं करने देता। ?

ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव

कृष्ण चन्द्र गर्ग

ईश्वर निराकार है। उसकी कोई शक्ल सूरत नहीं है। उसकी कोई मूर्ति भी नहीं बन सकती। इसी कारण वह आंख से देखा नहीं जा सकता। नाक, कान, जिह्वा, त्वचा - इंद्रियां भी उसका अनुभव नहीं कर सकतीं।

ईश्वर सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा सर्वत्र व्यापक है। वह सूक्ष्म इतना है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु में भी रमा हुआ है। कोई अणु भी उसकी उपस्थिति के बिना नहीं है। सभी जगह व्यापक होने के कारण उसे महान् भी कहा जा सकता है।

ईश्वर अन्तर्यामी है। आत्मा शरीर में बहुत सूक्ष्म पदार्थ है परन्तु ईश्वर उस आत्मा में भी विद्यमान है। इसी कारण से ईश्वर को अन्तर्यामी कहा गया है।

ईश्वर अजन्मा, अनन्त और अनादि है - वह कभी उत्पन्न नहीं होता है। जो वस्तु उत्पन्न होती है वह समाप्त भी अवश्य होती है। क्योंकि ईश्वर कभी उत्पन्न नहीं होता, इसलिए वह कभी मरता भी नहीं। वह सदा रहने वाला है।

ईश्वर ज्ञानवान् तथा न्यायकारी है। संसार में फैले सम्पूर्ण सद्ज्ञान का स्रोत ईश्वर ही है। वह पूर्ण ज्ञानी है। वेदों के रूप में उसने ही सारा ज्ञान प्राणिमात्र के कल्याण के लिए दिया है। वह सभी जीवों के कर्मों को देखता तथा जानता है। उन्हें उनके कर्मों के अनुसार यथायोग्य सुख व दुःख के रूप में फल देता है। सभी जीव कर्म करने में स्वतन्त्र हैं परन्तु उन कर्मों के अनुसार फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र हैं। यानि किए हुए कर्म का फल भोगने में जीव की मर्जी नहीं चलती। उसे अवश्य फल भोगना ही पड़ता है।

उत्पत्ति और प्रलय करने वाला भी ईश्वर ही है। सृष्टि की रचना करना, सभी प्राणियों को उनके कर्मों के अनुसार उत्पन्न करना, तथा सृष्टि का प्रलय करना भी उसी के हाथ में है।

ईश्वर आनन्द स्वरूप है। उसके समीप जाने से आनन्द प्राप्त होता है। जैसे सर्दी में ठिठुरते हुए को आग के पास जाने से सुख मिलता है। ईश्वर की जीव से समय या स्थान की दूरी नहीं है। यह दूरी ज्ञान की है। पवित्र मन से उस ईश्वर का ध्यान करने से उसकी समीपता अनुभव होती है।

ईश्वर दयालु है। उसने दया करके ही अनन्त पदार्थ हमारे सुख के लिए दे रखे हैं। जैसे वायु, जल, अन्न, सब्जियाँ, फल, औषधियाँ आदि।

ईश्वर निर्विकार है। उसमें राग, द्वेष, मोह, लोभ, काम, क्रोध, अहंकार आदि विकार नहीं आते।

ईश्वर अनुपम है। उसके समान दूसरा कोई नहीं है। उपरोक्त गुणों को धारण करने वाला वह अकेला ही है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। उसे अपने दया, न्याय, सृष्टि की रचना, प्रलय आदि काम करने के लिए किसी की सहायता की आवश्यक्ता नहीं है। बिना हाथ, पैर सहज में ही अपने सभी काम वह स्वयं ही कर लेता है।

ईश्वर की प्रेरणा-मनुष्य जब कोई अच्छा काम करने लगता है तो उसे आनन्द, उत्साह तथा निर्भयता महसूस होती है, वह ईश्वर की तरफ से ही होती है। मनुष्य जब कोई गलत काम करने लगता है उसे भय, शंका, लज्जा जो होती है वह भी ईश्वर की तरफ से होती है।

जो मनुष्य सब का उपकार करने और सब को सुख देने वाले हैं ईश्वर उन्हीं पर कृपा करता है। कोई मनुष्य जगत का जितना उपकार करता है उसको उतना ही सुख ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होता है।

इस गतिशील संसार में जो कुछ भी है ईश्वर उस सब में बसा हुआ है। (यजुर्वेद 40, 1)

उस परमात्मा की कोई आकृति या मूर्ति नहीं है। उसे नापा या तोला नहीं जा सकता। उस परमात्मा का नाम स्मरण अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करना अर्थात् धर्मयुक्त कर्मों का करना बड़ी कीर्ति देने वाला है।

(यजुर्वेद 32, 3)

परमात्मा का कोई रूप (आकृति, वर्ण, स्वरूप) नहीं जिसे आंखों से देखा जा सके। उसे कोई भी आंखों से नहीं देखता। वह हृदय में स्थित है। जो उसे हृदय से तथा मन से जान लेते हैं वे आनन्द को प्राप्त करते हैं।

(श्वेताश्वतर उपनिषद्)

वह परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। वह शीघ्रकारी है। उसका कोई शरीर नहीं है। वह छिद्र रहित है तथा उसके टुकड़े नहीं हो सकते है। वह नस नाड़ी आदि के बंधन से राहित है। अविद्या आदि दोष न होने से वह सदा पवित्र है। वह कभी भी पाप कर्म नहीं करता। वह सर्वज्ञ है। सब जीवों की मनोवृत्तियों को वह जानता है। वह दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला है। वह परमात्मा अनादि स्वरूप वाला है, उसको कोई बनाने वाला नहीं है, उसके माता पिता नहीं हैं। उसका गर्भवास, जन्म, मृत्यु आदि नहीं होते। वह परमात्मा सदा से प्रजा के लिये वेद के द्वारा सब पदार्थों का अच्छी तरह से उपदेश करता है। (यजुर्वेद 40, 8)

वह परमात्मा सब प्राणियों, अप्राणियों में छिपा हुआ है। वह सामने नहीं है। सूक्ष्म दुष्टि वाले लोग अपनी तीव्र और सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा उसे जान लेते हैं। (कठोपनिषद्)

जैसे तिलों में तेल, दही में घी, झरनों में पानी और अरणी नाम की लकड़ी में आग रहती है। और तिलों को पीलने से, दही को बिलोने से, और अरणियों को रगड़ने से ये प्रकट होते हैं। वैसे ही जीवात्मा में परमात्मा रहता है और वह वहीं मिलता है। सत्य और तप से उसे जाना जा सकता है। (श्वेताश्वतर उपनिषद्)

जैसे मकड़ी अपने शरीर के अन्दर से जाले बनाती है और फिर उन्हें अपने अन्दर ही समेट लेती है, जैस पृथिवी से औषधियाँ उत्पन्न होती हैं, जैसे जीवित पुरुष के शरीर में बाल निकलते हैं उसी प्रकार ईश्वर के प्रकृति रूपी शरीर से यह संसार बन जाता है। (मुण्डकोपनिषद्)

कृष्ण चन्द्र गर्ग

831 सैक्टर 10

****

In Everlasting Rememberance

VISHAL BATTA
14.5.92 to 9.6.2010

You are the wind that blows,
You're the diamond's glit on the snow,
You're the sunlight on the ripened grain,
You're the gentle autumn's rain.
When awaken in the morning hush,
You're swift uplifting rush
of quite birds in circled light,
You're the soft star that shines in the night,
You're with us,so why to cry;
You're there, you didn't die,
Your memory is a treasure,
You are loved beyond words &
Missed beyond measure.

Fondly remembered by

Grand Parents and parents, relatives and friends,

R.R. Batta and Vijay, Sanjay and Renu, Sudhir and Mira and Mehak
5268/2 Modern Housing Complex, Mani Majra-160101 (UT) Chandigarh.

9814067786, 9814879786,
8968863786, 2731986'

सन्तुष्टि

अशोक कुमार

सन्तुष्टि आधुनिक औद्योगिक विज्ञान युग में एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। कुछ के लिए ये मानसिक खुराक है, अन्यों के लिए मजाक है, मजबूरी भी है। बुद्धिजीवियों ने कहा है कि संतोष है तो संसार है। संसार है तो बहार है, बिना बहार जीवन बेकार है, विरान है। कुछ संतोष, उत्पीड़न से बटोरते हैं, कुछ स्वंय को पीड़ा देकर, प्रताड़ित कर ढूँढते हैं। भूल जाते हैं, संतोष कोई पेड़ों पर लगा फल नहीं, यह तो स्वयं स्थापित किया विज्ञान है, एक कला है।

अध्ययन किया जाये कि संतोष- सन्तुष्टिता है क्या? सन्तुष्टिता इच्छा पूर्ति और आनन्द बिन्दु का क्षितिज है। एक ऐसी स्थिति अवस्था है जिसमें पर्याप्त से अधिक की अपेक्षा आकांक्षा नहीं होती। यह सतर आने में वर्षों लग जाते है । यह एक मनौविज्ञानिक स्थिति है जिसमें मनुष्य अधिक एकत्रित करने की कामना, भावना, लालसा, लोभ नहीं करता बल्कि त्याग करता है। साधारणतः वैराग्य जीवन अपनाता है, रहन-सहन, व्यवहार, विचार, विहार की शैली में परिर्वतन होता है। नम्रता, ज्ञानता, कृतिज्ञता, अनुरागता, मधुरता की भागीदारी होती है इसमें द्वेष, तकरार, ईर्ष्या, घृणा, हिंसा बदला आदि का वध हो चुका होता है और धीरज, धैर्य, संतोष के आभूषण चमकते हैं। इसमें त्याग कर मनुष्य अपना सर्वस्व संतुष्टि हेतु लगा लेता है। साधारणतः सन्तुष्टि शब्द का अर्थ इच्छा पूर्ति - खुशियॉं, संतोष जो इच्छापूर्ति हेतु मिलता है। किसी हानी, चोट लगने पश्चात मिला आराम पूर्ति भी कहा जा सकता है। पीड़ा, उत्पीड़न, पश्चात मरहम भी है। किसी प्राप्ती उपरांत ऑखों में ऑसु आना जिसमें डर, क्रोध नहीं होता, भूख-प्यास मिटाना, खोये हुए या इच्छा हेतु प्यार मिलना । ऑखों को आकर्षित करे और हृदय मस्तिष्क को आनन्द दे वह सन्तुष्टि है। स्पर्श या आलिंगन भी संतोष है। अगर कोई कहे मुझे थोड़ा सा ओर मिल जाये वह संतोष नहीं है। विशेषज्ञयों का कहना है कि सन्तुष्टि का अर्थ है ज्ञानोदय अर्थात आत्मज्ञान का होना । जहॉ पदार्थवादता आपको धारण न कर सके। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि जब ज्ञान होता है तो अज्ञान दूर होता है। ज्ञान हमें उस पार ले जाता है और आनन्द आगमन होता है यही सन्तुष्टि भक्ति मार्ग भी है इसमें शोर नहीं होता । इसमें शांति होती है। इसमें सब्र, अनिच्छिता, त्याग का तालमेल होता है। सन्तुष्टिता, अनुभवों-परिणामों, लाभ-हानियों, संघर्ष, प्राप्तियों खुशियों का संगम है। चाणाक्य अनुसार अगर घर में उत्सव-यज्ञ, पाठ-कीर्तन, होते हैं तो संतान सुरक्षित होती है। स्त्री मधुर भाषिणी होती है, धन आवश्यकता अनुसार आता है। सेवक स्वामी भक्त होता है, सत्कार होता है, महापुरूषों का आना-जाना होता है, यह सब संतोष सामग्री है। शाकाहारी को संतोष है कि वह जीव हत्या में भागीदार नहीं है, संतोष आत्म बल देता है, संतोष धन, सबसे बड़ा धन है। कहना कि संतोष दुर्बलता की ओर ले जाता है यह असत्य है।

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो सदैव सन्तुष्टि सरोवर से दूरी पर रहता है। असन्तुष्टिता, अस्थिरता, अंसमजस्ता जैसी परछाईयॉं उसका पीछा करती हैं अगर टिप्पणी करें कि असन्तुष्टिता का मुख्य कारण क्या है? वह है प्रगति प्रसिद्धि, अवसरों का आभाव, परिस्थितियों की प्रतिकूलता, जीवन में गलत फैसले, दूर अंदेशता की कमी, सुख भोग विलास का दास, उद्देश्यों के लिए अल्प मार्ग विधि, गुरू, मार्ग दर्शक, ज्ञान का न होना, अशिक्षा, सत्संग प्रवचनों की कमी आदि। कभी-कभी मनुष्य बहुत नाकारात्मक सोच की कलपना में इतना गहरा चला जाता है कि दुखी हो जाता है। आंतरिक निरीक्षण की असमर्थता, मृग तृष्णा भावों को रखना, रोटी-कपड़ा-मकान की चिंता, संतान स्वस्थ से परेशानी, कुसंगति, स्वार्थसिद्धि आदि कभी-कभी अनैतिकता, दुषकर्मता, अर्तकता भी आ जाती है, धर्म, अध्यात, दर्शन का आभाव, दुख-पीड़ा न बांटना। अगर असहनशीलता, सवेदनशीलता, अनुशासनहीनता हो तो क्रोध आता है। खुशियों को निधन हो जाता है। मानसिक कमजोरी हावी हो जाती है, सन्तुष्टता भसम हो जाती है। विफलताऐं, असफलताऐं, भंवर बन जाती है। जीवन में कोई घटी घटना, व्यक्तित्तव को तोड़ देती है। अपमान, अकेलापन, समाज में बढ़ता जुर्म, नशावृतियां सब असन्तुष्टिता के कारक हैं।

बुद्धिजीवियों का तर्क है कि भारतीय मूल्यों की अनदेखी, सांस्कृति भूलना आदि असन्तुष्टिता बढ़ाती है। मनुष्य दुखीः भी होता है अगर सतगुण विचार, विकास हो जाये तो सन्तुष्टि खोज की जरूरत नहीं। सन्तुष्टि खोज केवल निर्बल करता है। शुद्ध विचारों से बलवानता आती है। किसी मुल्यावान वस्तु का मिलना दैवी देन होती है। अगर परिस्थितियां खराब हों तो नज़रिया बदलना चाहिए। समय, तथ्यों को मध्यनज़र रख कर अनुकूलता उत्पन्न करनी चाहिए। परिश्रम द्वारा मिला परिणाम, सन्तुष्टि को स्वयं उजागर कर देता है। उत्सुकता भी प्रसन्नता विधि है। कल्याणकारी कार्य भी सहायक हैं। शोद्धकर्ताओं ने बताया है के सन्तुष्टिता की उजागरता के लिए कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्णों को अपनाना होगा जैसे अच्छाई, व्यवहार, लचीलता, भूलना, माफी, तुरन्त अपने आपको संभालना, साहस और दूसरों की सहायता करना।

आलोचानात्मक विश्लेषण करें सन्तुष्टि एक विज्ञान है। उन्नति, समृद्धि, उत्पत्ति के मार्ग में अवरोधक है। परम ऊंचाईयां नहीं पाई जा सकती। कुछ का कहना है कि सन्तुष्टि वृजताओं, निराशाओं के आलिंगन में रहती है। परेशानियों से जूझना नहीं आता। त्याग ही उनकी सत्य मुक्ति मार्ग है। निंदनीय क्रियाओं से बचते हैं जो कि सदैव उन्नति के लिए अनिवार्य होती हैं। सुक्ष्म अध्ययन करें सन्तुष्टिता-असन्तुष्टिता एक रोग है, एक वशीभूत है। कभी कभी व्यक्ति इसमें तर्कों पर आधारित धारणाओं, विचार शक्ति भूल जाता है। शोधकर्ताओं ने बताया है कि अच्छी सोच, अच्छे परिणाम देती है उन्होंनें कहा वास्तविक बनों। परिणामों का दबाव न लो, परिस्थितियों में ढलो। सन्तुष्टि स्वयं के लिए नहीं, समाज के लिए खोजो। मनुष्य शरीर समस्याओं से भरा रथ समान है। वह चाहता है के यह शान्ति

और संतोष के पहियो पर चले इस के लिए हृदय और मस्तिष्क को नियंत्रण करना होगा। सन्तुष्टिता संयम के सेतु है जिसमें मानव अवगुण, बुराई, परिधि छोड़, अद्वितिय संसार में प्रवेश करता है। जहॉ इच्छा आशा अल्प होती है गौतम बुद्ध, गुरू नानक, कबीर, जैन और आर्य समाज मत ने भी सन्तुष्टि मंत्र बताए हैं उनका अनुसरण करना होगा। सन्तुष्टि मंत्र के लिए तंत्र निर्माण करना होगा। जिसमें कुछ तत्वों को डाल जैसे अपना कर्तव्य निभाओं, हर बात के लिए शिकायत न करो। मर्यादा में रहो, दुखः खुशियों को बांटों, दूसरों की पीड़ा महसूस करो। बात सुनो, देना सीखो, सहयोग प्रवृति रखो, वचन निभाओ। धार्मिक बनो, आदर, मधुरता, सब्र प्रयुक्त करो, त्याग का जनेऊ धारण करना, गिरों को उठाओ, मीठा लगने वाला झूठ ना बोलो।

सन्तुष्टि एक जीवनशैली है, जिसे, विधि से सर्वोतम बनाया जा सकता है, चित की विशेष दशा है। जिसे शांति कहते हैं। संतोष का दूसरा नाम सकून-शांति हैं, जिसकी खोज में मनुष्य तीर्थो, गुफाओं, जंगलों, एकांत में जाता है। यह मार्ग अति दुर्गम है। संतोष तो भीतर विराजित है, ज्ञान, दिव्यता, सत्यता जो संतोष, तृप्ति की ओर ले जाते हैं यह सब भीतर ही है। इन गुणों को भीतर से बाहर लाना है। संतुष्टिता घोटालों से बचने की घुट्टी है, निर्धनता का सामना करने के लिए संग्राम है। साधु, भीक्षु बनने की आवश्यकता नहीं। जो लोग इनकी सेवा करते हैं उन्हें ही संतोष है। ओशो ने कहा है कि जो बाहर है वही आनन्द नहीं, आनन्द भीतर है, केवल वर्तमान चित एकाग्र करो। स्वामी विवेकानन्द ने महा समाधी के पूर्व अपने जीवन काल में देवी जगदम्बा के पास केवल ज्ञान, भक्ति एव वैराग्य की मांग की थी ताकि इससे पहले भड़कन समाप्त हो और संतोष का आगमन हो। संतुष्टि श्रैष्ठ जीवन जीने के लिए रूद्राक्ष है। यही शिव है यही विजय है। संतुष्टिता निर्माण में संस्कारों की भी मूल्यवान भूमिका है।

उप-आबकारी और कर कमीशनर,
(सेवा निवृत) पंजाब।
मो. 98789-22336

****

आर्य समाज को फिर से जागृत करने के लिये तीसरी मासिक गोष्ठी का सफल आयोजन

सभी पाठकों को यह सूचित करते हुये हर्ष है आर्य समाज सैक्टर 22 में आर्य संगठन द्वारा तीसरी मासिक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था– 1947 के बाद आर्य समाज क्यों सिकुड़ता जा रहा है।

निम्न निष्कर्ष सामने आए

*** आर्य समाज में प्रचार बिल्कुल खत्म है क्योंकि प्रचार तभी प्रचार है अगर नये लोगों तक पहुंचा जाए। जो हम आर्य समाजों में प्रचार के नाम पर कर रहें हैं यह एक धार्मिक मनोरंजन है। वही इने गिने जाने पहचाने व्यक्ति हर बार होते हैं, हां कलाकार बदलते रहते हैं। यह वैदिक प्रवक्ता कहलवाने वाले, भजनोपदेशक, सन्यासी व अपने को स्वयं महात्मा कहने वाले सब कलाकार हैं, सब के अच्छी उंची professional fee है, जिसे हमारा अधिकारी वर्ग दक्षिणा कहता है।**

**** आर्य समाज को अगर जीवित रखना है तो यह बहुत ज़रूरी है हम नये लोगों तक पहुंचे, यह तभी सम्भव है**

1 जब आयोजन आर्य समाजों से बाहर खुले में किये जायें

2 नेताओं, अधिकारियों, कलाकारों, अमीर व प्रभावशाली व्यक्तियों के अभिन्दन करने की बजाये, जो नये व्यकित खास कर छोटे वर्ग के जो हमारे साथ जुड़ते हैं, उनके अभिन्दन करें। कलाकारों को professional fee दे रहे हैं तो अभिन्नदन क्यों। हां, जो नहीं लेते उनको सम्मानित करें।

3 आर्य समाज की विचारधारा को हम लोगों की भाषा में बहुत सरल ढ़ग से बतायें। जो कि आर्य समाज के दस नियम हैं। आज व्यकित के पास बहुत कम समय है और प्रचार के नाम पर अगर हम बड़े बड़े हवन करना शुरू का देगें तो उसे क्या समझ आयेगां? हवन का अपना समय व स्थान है।

4 हर आयोजन में कुछ गरीब व्यक्तियों को सिलाई मशीने आदी देकर सहायता की जाये। तभी लोग आर्य समाज को जानेंगे।

5 दूर दूर से महगें कलाकार बुलाने के स्थान पर लोकल श्रधालुओं का व तपस्वियो का प्रयोग किया जाये।

6 प्रेग्राम लम्बे न हों, छोटे हों। Retired व औरतो को छोड़कर किसी के पास 3–4 घंटे का समय नहीं।

अगली गोष्ठी 26 मई ऐतवार को 11 से 01 बजे तक आर्य समाज सैक्टर 16 मे होगी विषय होगा––––आर्य समाज के प्रचार को फिर से कैसे शुरू किया जाये। हर participant 10 मिन्ट के लिये बोल सकता है। आप सादर आमन्त्रित हैं। भारतेन्दु सूद, Co-ordinator 9217970381

Lighter Moments

वाह प्रभु क्या लीला तेरी

चूहे बिल्ली से डरते हैं,
बिल्ली कुते से डरती है,
कुता आदमी से डरता है,
आदमी बीवी से डरता है,
बीवी चूहे से डरती है।

———————

बेचारा मर्द, न जाने कब आयेगा उसके लिये MAN's day

अगर औरत पर हाथ उठाये तो 'बेशर्म',
अगर औरत से मार खाये तो 'बुझदिल',
औरत के सामने चुप रहे तो 'डरपोक',
घर से बाहर रहे तो 'आवारा',
घर में रहे तो 'नकारा',
बच्चों को डांटे तो 'जालिम',
न डांटे तो 'लापरवाह',
औरत को नोकरी करने से रोके तो
'शक करने वाला',
अगर न रोके तो 'बीवी की कमाई खाने वाला',
बीवी की माने तो 'चमचा',
बीवी की सुने तो 'जोरू का गुलाम',
न जाने कब आयेगा उसके लिये MAN's day

बाकी 99 रूपये कहां गये?

कपिल सिबल साहब कहीं भाषण दे रहे थे। अपने भाषण को रूचिकर बनाने के लिये उन्होने एक दृष्टांत सुनाया जो यों था———एक राजा ने अपने तीनों बेटों को सौ सौ रूपये दिये और कहा कि मैं तुम तीनो को परखना चाहता हूं। जाओ कुछ ऐसी वस्तु लाओ जिस से यह कमरा भर जाये। पहला पुरानी अखवार लाया पर कमरा न भरा, दूसरा कपास लाया पर कमरा फिर भी न भरा। तीसरा एक रूपए की मोमबती लाया, जलाते ही रोशनी से कमरा भर गया। यह सुनाने के बाद कपिल सिबल साहब बोले हमारे राहुल गाधी जी तीसरे बेटे की तरह हैं।

सुनने वालों में नरेन्दर मोदी भी थे। वह उठ कर बोले——— सिबल साहब यह सब तो ठीक है पर बाकी 99 रूपये कहां गये?

Blessed are those that can give without remembering, and take without forgetting.

One day a florist went to a barber for a haircut. After the cut, he asked about his bill, and the barber replied, 'I cannot accept moneyfrom you; I'm doing community service this week.'
The florist was pleased and left the shop.

When the barber went to open his shop the next morning, there was a 'thank you' card and a dozen roses waiting for him at his door.

Then a Politician came in for a haircut, and when he went to pay his bill, the barber again replied, 'I cannot accept money from you. I'm doing community service this week.'
The Politician was very happy and left the shop.

The next morning, when the barber went to open up, there were a dozen Congressmen lined up waiting for a free haircut.

वधु चाहिए

सौरभ आर्य (तलाक शुदा) 14/01/1982 मैढ़ राजपूत, M.Com,मांगलिक, 5'–4'' रंग गौरा, सुन्दर, ज्यूलरी शो रूम व एग्रीकलचर लैण्ड, जाति बन्धन नहीं, हरियाणवी को प्राथमिकता।

व

साहिल आर्य, अविवाहित, 03/05/1990 मैढ़ राजपूत, B.Tech, मांगलिक, 5'–8'' रंग साफ, सुन्दर, ज्यूलरी शो रूम व एग्रीकलचर लैण्ड, जाति बन्धन नहीं, हरियाणा की सुशिक्षित कन्या चाहिए, सरकारी नौकरी को प्राथमिकता।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS"

in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values'

'Some times your plans don't work because God has better ones- start looking at your failures in this perspective.'

'In order to succeed, your desire for success should be greater than your fear of failure.'

दान दो पर दे कर भूल जाओ

दोस्ताना अंदाज में मुझ से किसी ने पूछा,
तुम सब को email भेजते हो इसमें तुम्हे कया मिलता है,
मैने हंस कर कहा लेना देना तो व्यापार है,
जो देकर कुछ न मांगे वो ही तो प्यार है।

अपने दुख से दूसरों को दुखी न होने दो

चेहरे की हंसी से हर गम छुपाओ,
बहुत कुछ बोलो पर कुछ न बताओ,
खुद न रूठो कभी, पर सब को मनाओ,
ये राज है ज़िन्दगी का, बस जीते चले जाओ।

SUPPLIERS OF
ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Panjabi
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

****

You can not change the whole world but you can make a small part of it a better place to live before you die.

There was a man taking a morning walk on the beach. He saw that along with the morning tide came hundreds of starfish and when the tide receded, they were left behind and with the morning sun rays, they would die. The tide was fresh and the starfish were alive. The man took a few steps, picked one and threw it into the water. He did that repeatedly. Right behind him there was another person who couldn't understand what this man was doing. He caught up with him and asked, "What are you doing? There are hundreds of starfish. How many can you help? What difference does it make?" This man did not reply, took two more steps, picked up another one, threw it into the water, and said, "It makes a difference to this one."

What difference are we making? Big or small, it does not matter. If everyone made a small difference, we'd end up with a big difference, wouldn't we? You can not change the whole world but you can make a small part of it a better place to live before you die.

Senstivity to the people and environment around you is the centre point of dharma. Your prayer, arti, jap, yagna have no meaning if you are insensitive to the people around you, in your actions.

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म्।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
ई-मेल : dayanandashram@yahoo.com, वेब-साईट : www.dayanandbalashram.org

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम की मोहाली में फरवरी मास में स्थापना की जा चुकी है जिसमें अनाथ व निराश्रित (Orphan, Abandoned and Surrendered) बच्चों को सुरक्षा शिक्षा व संस्कार दिए जाते हैं। इस बाल आश्रम में इन बच्चों के रहने खाने और शिक्षा का निशुल्क प्रबन्ध किया गया है। अभी इस आश्रम में 10 बच्चे (6 लड़के, 4 लड़कियां) तथा 2 प्रबंधक हैं।

आपकी जानकारी में अगर कोई अनाथ व निराश्रित बच्चा है तो हमें सम्पर्क करें।

आप हमारी सहायता इस तरह भी कर सकते हैं :-

1. (क) बच्चों को खाना खिला कर।
   (ख) खाना अपने घर बनाकर अपने घर वितरण करना।
   (ग) खाना अपने घर बनाकर बाल आश्रम में वितरण करना।
   (घ) खाना बनाने के लिए राशन देना।
   (ङ) खाने के सहयोग के लिए पैसे देना।

2. आपके घर में कोई भी चीज़ जो जरुरत की नहीं है वो आप हमें दान दे सकते है जैसे बड़ो व बच्चों के कपड़े, रसोई का सामान बिस्तर व पंखे आदि। **आपके फोन करने पर संस्था अपनी गाड़ी आपके घर सामान लाने के लिए भेज देगी।**

3. आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, **नरेन्द्र गुप्ता** **लेखराम (+91 7589219746)**

जिन महानुभावों का सहयोग बाल आश्रम के लिए इस महीने प्राप्त हुआ है

दिनेश कुमार सूद

आर.डी. ऋषि

किशोरी लाल सोनी

शोभा सोबती

मदन मोहन सोबती

ओ.पी खुल्लर

जितने संवेदना विहीन हम है शायद ही दुनिया मे और हो

हां यह सत्य है, दुनिया भर में जितने संवेदना विहीन हम है शायद ही और कोई हो।

अब जब की भारत में कारों की भरमार है, आम आदमी के लिये चैन से सोना भी दुर्लभ हो गया है। यह चैन ले जाने वाला है होर्न की आवाज़ें। पहले यह बिमारी सिर्फ सड़को तक सीमित थी, आप घर में चैन से बैठ सकते थे।

अब जब कि एक घर में दो तीन गाड़ीयां व एक ईमारत में 8–10 परिवार रहते हैं मामला संगीन हो गया है। यह भी सब सहन हो जाता पर दो तीन नई बिमारीयां पैदा कर दी गई हैं। पहली कार के gear के साथ होर्न फिट करवा रहें हैं, परिणाम–– जब व्यक्ति कार निकालता है या park करता है, लगातार होर्न की ऐसी आवाज़ आती है जो कि ambulance की तरह दो– तीन मिनट कम से कम बजती रहती है व कम से कम 300 मीटर के radius तक प्रभाव छाड़ती है। यानी की 200 परिवार प्रभावित होतें हैं। अब जरा सोचिए कोई न कोई व्यक्ति सुबह 5 बजे से रात 12 बजे तक आता जाता रहता है, ऐसे में चैन से सोना भी मुश्किल हो गया है।

यही नहीं इस consumerism की कृपा से लोग ऐसे remote कार में fit करवा रहें हैं कि कुत्ता भी अगर tyre पर छू जाये तो ऐसा होर्न बजना शुरू हो जाता है कि सब घरों से बाहर आ जाते हैं।

क्यों है हम इतने संवेदनावहीन? विदेशों में होर्न बजाना bad manners में आता है
कहीं भी आपको होर्न की आवाज सुनाई नहीं देगी। वहां कुछ भी करते हुए लोग दूसरे के सुख चैन के बारे में साचते हैं।

मेरा मानना है कि जब तक हम दूसरे के सुख चैन के बारे में संवेदनशील नही न हम अच्छे नागरिक है न ही धार्मिकं। धर्म वही है जो हमें बेहतर इन्सान बनाता है। अच्छा है इस बारे में हम सोचे व लोगों को भी बतांए। हमारे देश में 95% लोगों को इन बातों का ज्ञान ही नहीं है।

शौच (Cleanliness of self and environment)
हमारे धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा है तो फिर क्यों है इस की अवहेलना

ऋषि पतंजली ने जीवन को आन्नदमय बनाकर समाधी अर्थात मोक्ष तक पहुंचने के लिये जो 'यम' और 'नियम'–– बताऐ ं हैं, उन में शौच भी एक है। यही नहीं ऋषि मनु ने भी धर्म के दस गुणों में शौच को स्थान दिया है।

शौच का अर्थ है स्वच्छता न केवल अपनी, बल्कि आसपास के वातावरण की भी। परन्तु ऐसा लगता है कि हमारे धर्म को हमारे भारतियों की अपेक्षा विदेशियों ने कहीं अच्छा समझा है।

बहुत दुख की बात है कि आज जब हमारे देश में तो शौच (स्वच्छता, खासकर आसपास के वातावरण की स्वच्छता) का कोई स्थान नहीं, विदेशों में इसे सब से महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। यहां जापान व श्री लंका के बारे में कुछ दिलचस्प बातें इस को प्रमाणित करती हैं।

1 जापान में स्कूलों में बच्चे अध्यापकाओं के साथ मिलकर रोज 15 मिनट सफाई करते हैं जिसमें toilets की सफाई भी शामिल है।

2 जापान में जिस किसी के पास भी कुत्ता है वह कुत्ते को बाहर ले जाते समय कुते का मल मूत्र उठाने के लिये थैला साथ ले कर चलता है।

3 जापान व हर developed देश में यह बात समझ ली गई है कि यदि व्यकित गंदगी निकालता या डालता है तो उठानी भी उसे ही है। Garbage bins से गन्दगी ले जाने के लिये आदमी रखे हुये हैं परन्तु उनका भी वही समाज में स्थान है जो की डाक्टर या इंजिनयर का है, उन्हें Health Engineer कहा जाता है। वे पढ़े लिखें होते हैं।

4 स्कूलो में विद्यार्थीयों के लिये सफाई के भी उतने नम्बर रखे गये हैं जितने की दूसरे किसी विषय के।

5 स्कूलो में विद्यार्थीयों को खाना खाने के बाद दांत साफ करना व अपना tooth brush sterile करना आवश्यक है।

6 स्कूलो में विद्यार्थीयों को आधा घन्टा व्यवहार कुशल होने की training दी जाती है। जिसका सीधा अर्थ है हम जो कुछ भी करे, उस से हमारे आस पास वालों की सुख शान्ति व चैन भंग न हो। मोबाइल फोन तो सब के पास है पर आपको public place में इसकी आवाज नहीं आयेगी।

उपर जो लिखा है वह तो था जापान जैसे उन्नतशील देश के बारे में अब हम बात करते हैं अपने जैसे देश श्री लंका के बारे में

1 श्री लंका के बोद्ध बिहारों में सभी भिक्षु सुवहः 4 बजे उठ कर सीधा झाड़ू व पानी की पाईप लेकर सफाई मे लग जाते हैं। मज़े की बात यह है कि बौद्ध बिहार का मुखिया जो की सब से बड़ा भिक्षु होता है सब से आगे होता है और दो घटें यह काम चलता है। जिस दौरान बाग बगीचों को भी पानी दिया जाता है। यानी कि भक्ति बाद मे, सफाई पहले। यही नहीं, दिन में दो तीन बार भिक्षु ही साफ सफाई करते हैं, कोई बाहर से सफाई करने नहीं आता।

2 परिवार के सदस्य सुवहः 5 बजे उठ कर अपना– अपना झाड़ू लेकर सफाई में लग जाते हैं।

यही नहीं अपने धर के बाहर की सफाई भी उंचे वाला झाड़ू लेकर खुद करते हैं। स्थानीय प्रशासन की गाड़ी निश्चित समय पर आती थी और वे अपना व आसपास का कूड़ा उस में डाल देते हैं। श्री लंका में सफाई करने वाले नहीं होते, सभी को घरों की सफाई अपने आप करनी होती है।

3 भगवानों को भोग या दूध वगैरा नहीं चडाया जाता न ही किसी तरह का प्रसाद मन्दिर के अन्दर बांटा जाता। इसलिये वहां के मन्दिरों की तो बहुत साफ सुथरे होते हैं।

उनका सफाई के बारे में नज़रीया

अगर मैं गन्दगी डालूंगा तो उठाउंगा भी। यही नहीं आसपास की सफाई भी मेरी जिम्मेवारी है।

हमारा सफाई के बारे में नज़रीया

मेरा काम है गंद डालना, उठाना दूसरे का काम है, सफाई के लिये अलग से आदमी होते है, मुझ से उमीद क्यों करते हो।।

आसपास की सफाई की मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं। सरकार जाने या आप जानो।

निष्कर्ष यह है कि हम 'शौच'–– अपनी व आसपास के वातावरण की स्वच्छता को धर्म का मुख्य अंग बनाकर जीवन में धारण कर लें। हमारी उन्नति व development का कोई महत्व नहीं रह जाता अगर हम अपनी व आसपास के वातावरण की स्वच्छता को महत्व नहीं देते। इस के लिये हमें कर्मकाण्डो को कम कर शौच को समय देना होगा।

With inputs from Vijay Arya #HM-42,Phase-2,Mohali-55 (CHD)M 09988505690

****

ऋषि बोध उत्सव मनाने का ढंग

एक चिन्तन का विषय

अभी चंडीगढ़ व पंचकूला की 10 आर्य समाजों ने मिलकर 22 सैक्टर आर्य समाज में ऋषि बोध उत्सव मनाया। बहुत बड़ा जनसमूह था जिस में अहुत बड़ी संख्या राजपुरा से आये व बुलाये आर्य समाजियों की थी। तीन चार घंटे अच्छा कार्यकम था, बाहर से बुलाये विशेष वक्ता थे।

पर इसका दूसरा पहलू भी है। ऋषि बोध उत्सव आर्य समाजियों का सब से महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि इस दिन ऋषि को बोध न होता तो यह सब आर्य समाज भी न होते। कैसा लगता है अगर इस दिन बाकी 9 आर्य समाजों में बिल्कुल सुनसान हो।

गुरू पर्व वाले दिन छोटे से लेकर बड़े गुरद्वारे में अपना निजी पर्व होता है व उस इलाके की जनता उत्साह से उस में हिस्सा लेती है। यही मन्दिरों में भी है। सब मन्दिर जन्माष्टमी के दिन सजे होते हैं। यहां हाल यह है कि राजपुरा वाले भी चण्डीगढ़ आ गये थे। मोहाली वालों की तो बात ही निराली है। मोहाली में आर्य समाज होने के बावजूद पर्व की तो बात छोड़ो सप्ताहिक सत्संग भी चंडीगढ़ आ कर ही करते हैं।

क्या अच्छा न होगा एक ही आर्य समाज में आर्य समाजियों का बड़ा समूह इकटठा करने की बजाये हर एक आर्य समाज अपने क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण पर्व को मनाये जिस में कोशिश यह हो की उस क्षेत्र के नये आदमी आयें। महत्वपूर्ण आर्य समाजियों की भीड़ इकटठी न करके नये व्यक्तियों तक पहुंचना है। प्रश्न यह है कि अगर घर में सत्संग करने पर 50 व्यक्ति आ जाते हैं तो आर्य समाज में क्यों नहीं आते? इसका जवाब यह है कि जब हम घर में करते हैं तो हम उन्हें आदरपूर्वक बुलाते हैं। जब की आर्य समाज में सब खानापूर्ती होती है। बाहर से वक्ता बुलाने की जगह हम अपने बच्चों, युवकों व महिलाओं को तैयार व प्रोत्साहित कर के उस में बोलने का व भजन गाने का मौका दें। जब मौका देंगें तो इन बाहर से बुलाये वक्ताओं से कहीं अच्छी व व्यवहारिक बात कहेंगे। तभी आर्य समाज जीवित रहेगा वरना ब्रहम समाज की तरह खत्म हो जायेगा व महर्षि दयानन्द का नाम D.A.V में D के रूप में रह जायेगा।

अभी मुझे सैक्टर .27 आर्य समाज के एक उत्सव में शामिल होने का मौका मिला। उन्होने किसी बाहर के वक्ता को नहीं बुलाया था। दोनो वक्ता चण्डीगढ़ के थे व बच्चों को खुल कर मौका दिया। बहुत ही अच्छा लगा । वहां की मन्त्राणी व प्रधान जी बधाई के पात्र हैं।

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 60 वर्ष

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Banglore-22875216, Hydrabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

PARKASH AUSHDHALYA

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870